वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 119 | शनिवार 23 अगस्त 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

एआई इनोवेशन समिट 2025 को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा...

एआई तकनीक बन रही डिजिटल क्रांति

देश में सबसे ज्यादा सीए राजस्थान के यह प्रसन्नता का विषय

चार्टर्ड अकाउटेंट देश की आर्थिक व्यवस्था की आत्मा

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि चार्टर्ड अकाउटेंट देश की आर्थिक व्यवस्था की आत्मा हैं तथा उनका राष्ट्र निर्माण में बड़ा योगदान है। उन्होंने सभी चार्टर्ड अकाउटेंट्स से आह्वान किया कि वे अपनी योग्यता, विचारों एवं मेहनत से राज्य के विकास में अधिक से अधिक भागीदार बनें तथा देश-प्रदेश की प्रगति में योगदान दें, जिससे विकसित एवं समृद्ध राजस्थान के संकल्प को गति मिले। शर्मा शुक्रवार को भारतीय चार्टर्ड अकाउटेंट संस्थान, जयपुर शाखा द्वारा आयोजित 'एआई इनोवेशन समिट 2025' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि देश में सबसे ज्यादा सीए राजस्थान से हैं। उन्होंने कहा कि सीए नई तकनीक आने पर, कोई नया नियम बनने पर अथवा वैश्विक अर्थव्यवस्था में कोई परिवर्तन आने पर सबसे पहले उसे समझते हैं, उसे अपनाते हैं और समाज को उसकी सही दिशा दिखाते हैं। यही कारण है कि आमजन को सीए पर बहुत विश्वास होता है, उन पर नए बदलावों और तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए समाज को सही दिशा दिखाने एवं इस विश्वास पर खरा उतरने की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में अर्थव्यवस्था की दृष्टि से 11वें स्थान से आज चौथे स्थान पर आ गया है तथा शीघ्र ही हम दुनिया की तीसरी आर्थिक शक्ति बनेंगे। शर्मा ने कहा कि एआई केवल एक तकनीक नहीं बल्कि एक क्रांति के रूप में आगे बढ़ रही है। भारत भी एआई क्षेत्र में तेजी से पहचान बना रहा है। एआई भारत की तकनीकी विशेषज्ञता में और बढ़ोतरी करेगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान भी डिजिटल इंडिया मिशन और इंडिया एआई मिशन के साथ पूर्ण तालमेल और समन्वय में निरंतर कार्य कर रहा है। हमारी सरकार नई एआई और मशीन लर्निंग पॉलिसी पर भी काम कर रही है।

राज्य में हर क्षेत्र में अपार संभावनाएं

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में हर क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। पर्यटन, खनन, सौर और पवन ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में प्रदेश देश में अग्रणी राज्य बनकर उभर रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने प्रदेश में निवेश को बढ़ावा देने के लिए राइजिंग समिट के माध्यम से 35 लाख करोड़ के एमओयू किए। साथ ही, राज्य में पेयजल एवं बिजली की प्राथमिकता को समझते हुए अनेक निर्णय लिए गए। रामजल सेतु लिंक परियोजना, यमुना जल समझौता, देवास परियोजना, इंदिरा गांधी नहर, गंगनहर, माही बांध जैसी परियोजनाओं के माध्यम से जल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि बिजली के क्षेत्र में प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी फैसले लिए गए हैं। हम वर्ष 2027 तक किसानों को दिन में बिजली भी उपलब्ध कराएंगे। साथ ही, हमने 5 साल के कार्यकाल में युवाओं को 4 लाख सरकारी और निजी क्षेत्र में 6 लाख रोजगार देने का लक्ष्य रखा है।

राज्य सरकार हर क्षेत्र में प्रगति कर रही : कर्नल राठौड़

उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है। विकास में नवीन तकनीकों एवं एआई का उपयोग कर राज्य को गुड गवर्नेंस की ओर ले जाया जा रहा है। इससे पहले शर्मा ने 'प्राइवेसी इन एआई' पुस्तक तथा दो दिवसीय समिट की स्मारिका का विमोचन किया। साथ ही, उन्होंने आईसीएआई सदस्यों के प्रशिक्षण के लिए बनाए गए 'एआई 2.0' कोर्स का ऑनलाइन शुभारंभ भी किया। इस अवसर पर भारतीय चार्टर्ड अकाउटेंट संस्थान, जयपुर शाखा के सदस्य सीए सतीश गुप्ता, सीए रोहित सहित बड़ी संख्या में सीए मौजूद रहे।

ऑपरेशन सिंदूर का सबसे ज्यादा फायदा राजस्थान को : भजनलाल

जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि हमने सोचा भी नहीं था। ऑपरेशन सिंदूर का सबसे ज्यादा फायदा राजस्थान को मिला है। सिंधु नदी का पानी भी राजस्थान को सबसे ज्यादा मिलने वाला है। जब काम करते हैं तो ईश्वर भी साथ देता है। आपने देखा होगा। पिछले साल पूरे बांध भर गए। इस बार भी पूरे बांध भर रहे हैं। इससे राजस्थान में खुशहाली आ रही है। सीएम भजनलाल शर्मा जयपुर के बिड़ला ऑडिटोरियम में एआई पर दो दिवसीय सीए सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में बोले रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा - हमारे राजस्थान के लिए बिजली की आवश्यकता है। बिजली में हम किस तरह से आगे बढ़ सकते हैं। देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पानी का भी सबसे पहले एमओयू हुआ। बिजली का भी हुआ। बिजली के क्षेत्र में भी लगातार काम कर रहे हैं। हमने कहा था 2027 तक हम किसान को दिन में बिजली देंगे, उद्योग को पूरी बिजली देंगे।

परिश्रम करने से मिलती है सफलता: मुनि आदित्य सागर

कीर्तिनगर जैन मंदिर में शनिवार, 23 अगस्त को होगा जैनत्व दम्पति संस्कार, 300 से अधिक दम्पति लेंगे संस्कारों का संकल्प

10 दिवसीय आध्यात्मिक श्रावक साधना संस्कार शिविर में पूरे देश से शामिल होंगे श्रद्धालु

जयपुर. शाबाश इंडिया

संस्कारों के साथ रहने से निज का विकास होता है। अगर हम अपनी आत्मा को संयम के ताले में रख पाएंगे तो ही हम अपना कल्याण कर पाएंगे। साधु जब नगर में आते हैं तो श्रावक श्राविकाओं के आत्म कल्याण का सीजन चलता है। चातुर्मास के समय में युवाओं के साथ में वृद्धो को भी धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। ये उदगार पट्टाचार्य विशुद्ध सागर महाराज के शिष्य श्रुत संवेगी महाश्रमण आदित्य सागर महाराज ने कीर्ति नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में शुक्रवार को आयोजित धर्म सभा में व्यक्त किये। मुनि श्री ने आगे कहा कि लक्ष्मी की वृद्धि परिश्रम से होती है और तप की वृद्धि होती है क्षमा के भाव से। आज लोग पैसे के चक्कर में सब कुछ भूल गए हैं। कुछ लोग धर्म क्षेत्र में पैसा कमाने की सोच रखने लग गए है। अगर व्यक्ति बुद्धि का सही उपयोग करता है तो पैसा कमाना कोई कठिन बात नहीं है । परिश्रम करने वाले को सफलता निश्चित मिलती है। मुनि श्री ने कहा कि व्यक्ति को मेहनत करने में कभी शर्म नहीं करनी चाहिए और अपनी शक्ति से ज्यादा मेहनत करने वाले ही सफलता को प्राप्त कर पाते हैं और मिसाल बन जाते हैं। काम कोई छोटा बड़ा नहीं होता सोच हमारी छोटी बड़ी होती है। आज जो लोग हमें पैसे वाले दिखते हैं उन्होंने इससे पहले बहुत मेहनत की थी तब आज इस मुकाम को प्राप्त कर पाए हैं। पैसा मेहनत से आएगा लेकिन हमें अपनी दिशा सही रखनी चाहिए।

जैनत्व दम्पति संस्कार आज 23 अगस्त को

अध्यक्ष प्रेम कुमार जैन एवं महामंत्री जगदीश जैन ने बताया कि शनिवार, 23 अगस्त को जयपुर शहर में प्रथम बार आदित्य सागर महाराज के सानिध्य में जैनत्व दम्पति संस्कार शिविर का आयोजन होगा। इस शिविर में लगभग 300 से अधिक दम्पत्ति भाग लेंगे। प्रातः 6:30 बजे से कीर्तिनगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आयोजित इस शिविर में बैठने वाले दम्पति सदस्यों को कई नियम लेने होगें । प्रचार प्रसार मुख्य समन्वयक विनोद जैन कोटखावदा के मुताबिक शिविर के दौरान प्रातः 8.15 बजे धर्म सभा में मुनि आदित्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होंगे। प्रचार मंत्री आशीष बैद के मुताबिक रविवार, 24 अगस्त को प्रातः जैनत्व उपनयन संस्कार शिविर - 2025 का आयोजन किया जाएगा जिसमें बच्चों को संस्कार दिये जाएंगे। अध्यक्ष प्रेम कुमार जैन एवं महामंत्री जगदीश जैन के मुताबिक दशलक्षण महापर्व के दौरान 28 अगस्त से 6 सितम्बर तक दस दिवसीय आध्यात्मिक श्रावक साधना संस्कार शिविर - 2025 का सन्नी पैराडाईज के पीछे, मुंशी महल गार्डन, टौक रोड़ पर विशाल आयोजन होगा जिसमें पूरे देश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होंगे। -**विनोद जैन कोटखावदा**

संत समागम, रागी को बैरागी बनने का माध्यम हैं धर्म का पुरुषार्थ जरूरी है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

टोंक. शाबाश इंडिया

हमारी और परमात्मा की आत्मा एक जैसी है उनके जैसे हमें भी परमात्मा बनने की योग्यता है आत्मा से कर्मों को हटाने पर ही चारों गतियां में जन्म मरण नहीं होगा आप लोग दुख को सुख मानते हो। आत्मा की शक्ति ज्ञान और पुरुषार्थ से करने पर प्राप्त होती हैं। महापुरुषों महान आत्माओं को संसार के दुख देखकर वैराग्य होता है भगवान के दर्शन करते समय उनके चेहरे को देखकर चर्चा करना चाहिए चिंतन करना चाहिए रागी को बैरागी बनने का सूत्र संत समागम से मिलता है ।मिथ्यादृष्टि राग में सुख मानता है ।प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने जैन धर्म संस्कृति ,जिनालय संरक्षण जिनवाणी संरक्षण पर महत्वपूर्ण अविश्वमरनीय योगदान दिया है। शांति सागर जी तीर्थ उदाहरण रहे हैं उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में मिथ्यात्व का त्याग कराया। जैनवाडी ग्राम के जिन मंदिरों में ताले लगे थे उन्हें समाज की धारा में वापस जैन समाज को जोड़ा ।सामाजिक कुरीति बाल विवाह रोकने के लिए शारदा एक्ट बनाने की प्रेरणा दी। यह मंगल देशना 16 कारण पर्व में आचार्य भक्ति अंतर्गत आचार्य श्री वर्धमानसागर जी ने धर्मसभा में प्रकट की। राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व मुनि श्री हितेंद्र सागर जी महाराज ने आचार्य भक्ति अंतर्गत आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की गृहस्थ अवस्था से दीक्षा,उपवास, उपसर्ग , व्रत परिसंख्यान,समाधि तक के अनेक प्रसंग बताएं । वर्तमान में शेडवाल, कुंभोज बाहुबली आदि स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए गुरुकुल की स्थापना कराई ।उनकी सुमधुर कंठ से आचार्य श्री का गुणानुवाद गीत सुनकर संपूर्ण सभा द्रवित हो गई अनेकों के नेत्र अश्रुओं से सजल हो गए। सम्मेदशिखर जी जो भाव सहित दर्शन वंदना करता हैं उसे तीर्यच और नरक गति नहीं मिलती है। आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य भंवर लाल राकेश कुमार पवन कुमार मनीष कुमार चांदसेन वाले परिवार जयपुर को मिला शुक्रवार को निमोर्हीमति जी माताजी का केश लोचन हुआ। पारसोला, किशनगढ़, पुणे से आए लोगों का सम्मान किया गया।

बंगाली बाबा मंदिर में गणपति महोत्सव 26 व 27 अगस्त को, तैयारियां जोरों पर

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिल्ली रोड स्थित बंगाली बाबा आत्माराम ब्रह्मचारी गणेश मंदिर में श्री महागणपति महोत्सव आगामी 26 व 27 अगस्त को धूमधाम से मनाया जाएगा। इस दौरान दुग्धाभिषेक, श्रंगार, पंचामृत अभिषेक, आरती व भजन संध्या के सहित कई धार्मिक आयोजन होंगे। महोत्सव की तैयारियां जोरों पर चल रही है। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष नारायण लाल अग्रवाल व उपाध्यक्ष व संयोजक संजय पतंगवाला ने बताया कि महोत्सव के एक दिन पूर्व 25 अगस्त को सुबह 9 बजे ध्वजाअर्पण के साथ श्री महागणपति महोत्सव की शंरूआत होगी। उन्होंने बताया कि आगामी 6 व 7 नवम्बर को श्री महागणपति महोत्सव मनाया जाएगा। महोत्सव के पहले दिन 6 को पंचामृत अभिषेक,सिंदूर अर्पण के बाद सिंजारा पर्व मनाया जाएगा। महामंत्री गजेन्द्र लूणीवाल ने बताया कि गणेश चतुर्थी को सुबह 5 बजे मोदक अर्पण के बाद दोपहर 1 बजे आरती व साम को 6 बजे भजन संध्या का आयोजन होगा।

गुणग्राही ही बन सकता है गुणवान और पुण्यवान: युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी

पनवेल. शाबाश इंडिया

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के तृतीय दिवस पर पनवेल जैन स्थानक में आयोजित विशाल धर्मसभा में श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने कहा कि गुणग्राही ही गुणवान बन सकता है और गुणवान ही पुण्यवान बन पाता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि पर्युषण आत्मा की आराधना का पर्व है। पखी दिवस पर किया गया प्रतिक्रमण आत्मा की गहराई तक सफाई करता है। जैसे व्यापारी प्रतिदिन लाभ-हानि का लेखा-जोखा करता है, वैसे ही साधक को अपने विचार, वचन और कर्म का हिसाब रखना चाहिए। सामायिक प्रतिक्रमण साधक को समभाव की ओर ले जाता है और जीवन को निर्मल बनाता है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति धनवान बनने की चाह रखता है, लेकिन वास्तविक सम्पन्नता गुणों में है। धन से क्षणिक सम्मान मिल सकता है, परंतु गुण आत्मा को स्थायी उन्नति और सुख प्रदान करते हैं। धन अर्जित किया जा सकता है और खो भी सकता है, लेकिन अर्जित किए गए गुण ही जीवन की सच्ची पूँजी हैं। जैसे शरीर को हवा और पानी चाहिए, वैसे ही आत्मा को बलवान और स्वस्थ रखने के लिए गुणों की आवश्यकता है। युवाचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि यदि धन के साथ गुण जुड़े हों तो वह व्यक्ति को ऊँचाई पर ले जाता है, लेकिन धन के साथ अवगुण जुड़े हों तो वही पतन का कारण बनता है। इसलिए हर परिस्थिति में अच्छाई को देखने की दृष्टि विकसित करनी चाहिए। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि श्रीकृष्ण ने सड़ी हुई कुतिया में भी उसके दाँतों की सुंदरता देखी। यही दृष्टिकोण उन्हें महान और पूजनीय बनाता है। यदि हम भी गुणग्राही बनेंगे तो जीवन सकारात्मक दिशा में अग्रसर होगा और हम गुणवान से पुण्यवान बनकर आत्मा को शुद्ध कर पाएंगे। हितमित भाषी हितेंद्र ऋषिजी एवं धवल ऋषिजी ने अंतगड़दशांग सूत्र का वाचन- विवेचन करते हुए कहा कि आत्मा को हल्का और निर्मल बनाना ही साधक का लक्ष्य है। मोह का जाल साधना में सबसे बड़ी बाधा है, जो धर्म-ध्यान से रोकता है। इसलिए साधक को प्रमाद का त्याग कर निरंतर धर्म-आराधना करनी चाहिए।

अंबाह से अहिक्षेत्र की भव्य तीर्थयात्रा का आयोजन

भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर श्रद्धालुओं ने लिया आचार्य वसुनंदी जी महाराज का आशीर्वाद

अजय जैन. शाबाश इंडिया

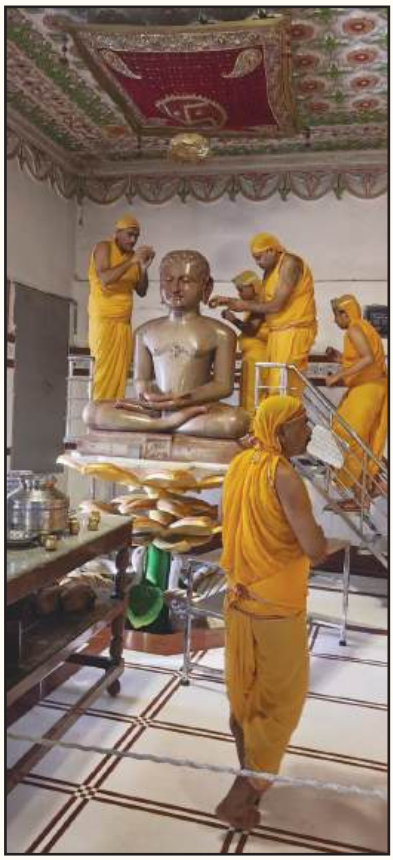

अंबाह। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप अंबाह के तत्वावधान में अहिक्षेत्र तीर्थ के लिए विशेष बस यात्रा का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें अंबाह नगर एवं आसपास के क्षेत्रों से लगभग सो श्रद्धालु शामिल हुए। यह यात्रा 21 अगस्त 2025, गुरुवार की रात्रि 7:30 बजे धार्मिक उत्साह और भक्ति भावना के साथ अंबाह से रवाना हुई। यात्रा के प्रारंभ अवसर पर बस को मंगलाचरण और भक्ति गीतों के बीच हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जय जिनेंद्र के उद्घोष, भक्ति गीतों और भजनों से वातावरण भक्तिमय हो उठा। श्रद्धालुओं में उत्साह इतना था कि पूरी यात्रा मार्ग में भक्ति गीतों, स्तुतियों और धर्म चचाओं का क्रम निरंतर चलता रहा। बस को आकर्षक ढंग से सजाया गया था और यात्रियों को भी विशेष सुविधा के साथ बैठने की व्यवस्था दी गई थी। शुक्रवार को अहिक्षेत्र पहुँचने के बाद श्रद्धालुओं ने भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर आत्मिक शांति का अनुभव किया। तीर्थ स्थल पर पहुँचते ही भक्ति का वातावरण और गहन हो गया। परम पूज्य 108 आचार्य वसुनंदी जी महाराज ससंघ के सान्निध्य ने इस यात्रा को और भी पावन बना दिया। सामूहिक रूप से अभिषेक, पूजन, आरती और प्रवचनों का आयोजन हुआ, जिसमें शामिल होकर श्रद्धालुओं ने अनोखा धर्मलाभ प्राप्त किया। महिलाओं और युवाओं ने भी भक्ति गीत प्रस्तुत कर यात्रा को और भी रंगीन व आध्यात्मिक बना दिया। इस यात्रा की सफलता में सबसे उल्लेखनीय योगदान संतोष जैन रिठौना वालों का रहा। उन्होंने पूरी यात्रा को लीड करते हुए श्रद्धालुओं की सुविधाओं का ध्यान रखा और अनुशासन व सौहार्द बनाए रखने में विशेष भूमिका निभाई। उनके समर्पण भाव और नेतृत्व क्षमता की सभी ने प्रशंसा की और माना कि ऐसे समर्पित व्यक्तित्व ही समाज को एकजुट और संगठित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। यात्रा में शामिल रिटायर्ड शिक्षक महेशचंद्र जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अहिक्षेत्र तीर्थ की यह यात्रा जीवन का अविस्मरणीय अनुभव है। उन्होंने बताया कि इतनी बड़ी संख्या में समाजजन का एक साथ धर्म यात्रा पर जाना, भगवान के चरणों में पूजन-अर्चन करना और गुरुदेव के प्रवचनों का लाभ लेना आत्मा को गहन शांति और संतोष प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन नई पीढ़ी को धर्म से जोड़ने का सर्वोत्तम माध्यम है और आने वाले समय में समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। यात्रा को सफल बनाने में कुलदीप जैन, अमित जैन, विकास जैन, श्रेयांश जैन, राहुल जैन, कपिल जैन, आकाश जैन और आशु जैन सहित अन्य समाजसेवियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन सभी ने मिलकर यात्रियों की सुविधा, भोजन प्रसादी, सीट व्यवस्था और भक्ति कार्यक्रमों का संचालन करते हुए यात्रा को सुगम और अनुशासित बनाए रखा। हर किसी ने अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाया, जिसके परिणामस्वरूप यात्रा में शामिल हर व्यक्ति को सुखद अनुभव प्राप्त हुआ। संतोष जैन ने बताया कि अहिक्षेत्र की इस यात्रा ने यह संदेश दिया कि जब समाजजन एकजुट होकर धार्मिक कार्य करते हैं तो न केवल आस्था प्रबल होती है, बल्कि नई पीढ़ी भी अपनी परंपराओं और संस्कारों से जुड़ती है। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप अंबाह की इस पहल ने पूरे क्षेत्र में धार्मिक जागरूकता और एकता का अद्भुत संदेश दिया है। यात्रा से लौटकर सभी श्रद्धालु भक्ति भाव से अभिभूत और आत्मिक शांति से परिपूर्ण दिखाई दिए। श्रीमती रजनी जैन ने कहा दिगंबर जैन सोशल ग्रुप अंबाह द्वारा आयोजित अहिक्षेत्र तीर्थ यात्रा अनुशासन, एकता और भक्ति का अद्भुत संगम रही। वरिष्ठ श्रद्धालुओं का साथ इस यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता रही। यह आयोजन समाज की धार्मिक गतिविधियों में मील का पत्थर साबित होगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। श्रद्धालुओं ने इस पुण्य यात्रा में भाग लेकर अपने जीवन को धन्य महसूस किया और सभी ने एक स्वर में यही कहा कि ऐसी यात्राओं का आयोजन समय-समय पर होता रहना चाहिए ताकि धर्म की धारा निरंतर प्रवाहित होती रहे।

वेद ज्ञान

ईश्वरीय कृपा

वह सत्य स्वरूप परमात्मा एक है जिसे हम सभी अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। धरती, जल, अग्नि, वायु और आकाश हर जगह उसकी सत्ता विराजमान है। उसकी मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता है। वह कण-कण में समाया है। हमारे भीतर हर पल वह हमारे साथ है। हमारे हृदय मंदिर में यदि परमात्मा के नाम की बयार बहने लगे तो समझें कि सारा संसार मधुवन-वृंदावन हो जाता है। इसलिए प्रभु की सुध-बुध लग जाए इसके लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। अपनी पात्रता तैयार करने के लिए आज ही तत्पर हो जाएं। मन, कर्म और वचन से सच्चे बन जाएं। अपनी आत्मा को उस परमात्मा से जोड़ने का प्रयास करें। ऐसा इसलिए, क्योंकि हम उस एक ईश्वर के ही अंश हैं। यह भगवान श्रीकृष्ण की स्वयं की उद्घोषणा है, परंतु ध्यान रहे जिसको भी प्रभु का इस दुनिया में सहारा नहीं मिला है उसे संसार सागर का किनारा भी नहीं मिला है। जो सब सहारों की फिक्र छोड़कर एक प्रभु का सहारा पा लेता है। वह सब कुछ साध लेता है। ईश्वर को जानने के पथ पर जो अग्रसर होता है वह पाप कर्मों से बच जाता है। उसके अंदर का अहंकार मिट जाता है। मिथ्या भावनाएं अनायास ही चली जाती हैं। ध्यान रहे जो जागता है और जीवन में हर पल सचेत व सजग रहता है उसे ही कृपा मूर्ति, करुणा के सागर परमपिता का दर्शन होता है। वेदों में भगवान ने स्वयं कहा है कि ए मनुष्य! तू हर पल मेरे साथ है, तू मेरे आश्रय में बसा हुआ है, मैं तेरा मित्र हूं। परमात्मा की कृपा मिलते ही लोहे जैसा जीवन भी कंचन बन जाता है। हम इस मायावी संसार में कितना भी घूम लें, भटक लें, लेकिन शांति तभी मिलेगी जब हम प्रभु की चरण-शरण में पहुंचेंगे। कितना ही भोगों को भोग लें, पर यह भूख मिटने वाली नहीं है। यह मिटेगी मात्र भगवान की भक्ति से। भगवान प्रेम के भूखे हैं, भक्ति के भूखे हैं। वह जिसकी बांह पकड़ लें उसकी नैया पार है। वह अंतर्यामी नाथ परमात्मा ही इस जीवन के आधार हैं। उनकी कृपा से ही हमारे जीवन में जाग्रति आ पाएगी। वही माता है, पिता है, बंधु है, हमारे सखा हैं। जब सारे रास्ते दुनियादारी के बंद हो जाते हैं और रिश्ते नाते टूट जाते हैं तो भी वह हमारे साथ रहता हैं। इसलिए उस परमपिता का ध्यान हमेशा बनाए रखें। जीवन सफल होगा।

संपादकीय

ऑनलाइन खेलों की काली दुनिया

इसमें कोई दो राय नहीं कि इंटरनेट के विस्तार के मौजूदा दौर में शायद ही कोई क्षेत्र बचा है, जिसमें इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण नहीं हो गई हो। मगर जितने व्यापक स्तर पर इसके सकारात्मक उपयोग का दायरा बढ़ा है, उसी के समांतर कुछ ऐसे क्षेत्र भी अपने पांव फैला रहे हैं, जो न केवल सामाजिक ढांचे को आर्थिक रूप से भी नुकसान पहुंचा रहे हैं, बल्कि बड़ी संख्या में लोग मनोवैज्ञानिक रूप से भी बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं।

'ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' यानी धन आधारित ऑनलाइन खेल एक ऐसा ही चलन है, जिसने अब मनोरंजन की सीमा को पार करते हुए पैसे कमाने के लालच से उपजी लत और आर्थिक नुकसान का जटिल स्वरूप ग्रहण कर लिया है। भारी तादाद में लोग इसके जाल में फंस रहे हैं और अपनी मेहनत की कमाई गंवा रहे हैं। इसे लेकर पिछले काफी समय से चिंता जताई जा रही है, लेकिन सरकार ने इस पर लगाम लगाने या इसे विनियमित करने के बजाय इसके दूरगामी असर की अनदेखी की। इसके नतीजे अब खुल कर सबके सामने आ रहे हैं और चिंता की वजह बन रहे हैं। इसकी वजह से होने वाले नुकसान का दायरा व्यापक होते जाने के बाद अब जाकर खुद सरकार ने भी माना है कि 'ऑनलाइन रियल मनी गेमिंग' समाज के लिए एक बड़ी समस्या बन चुकी है और इस पर लगाम लगाना वक्त की जरूरत है। अनुमान यह लगाया गया है कि धन-आधारित ऑनलाइन खेलों के चक्कर में करीब पैंतालीस करोड़ लोग हर वर्ष लगभग बीस हजार करोड़ रुपए गंवा देते हैं। इसकी लत की वजह से अब तक सैकड़ों परिवार आर्थिक रूप से बर्बाद हो चुके हैं। त्रासद पक्ष यह भी है कि इस लत की वजह से ऑनलाइन खेलों के जरिए लोग पैसे कमाने की भूख में लगातार हारते जाते हैं और बाद में कई लोग आत्महत्या और हिंसा जैसा गंभीर कदम भी उठा लेते हैं। इसके नुकसानों को लेकर चिंता पहले भी जताई जाती रही है, अब देर से सही, लेकिन सरकार ने गेमिंग उद्योग के एक हिस्से से मिलने वाले राजस्व के सवाल को फिलहाल पीछे छोड़ते हुए समाज कल्याण को प्राथमिकता देना तय किया है। इस क्रम में ऑनलाइन गेम को विनियमित करने एवं शैक्षिक और सामाजिक आनलाइन खेलों को बढ़ावा देने वाले एक विधेयक को लोकसभा में पारित कर दिया गया है। सही है कि सरकार आज धन आधारित ऑनलाइन गेमिंग को एक बड़ी बुराई बताते हुए इससे बचने की जरूरत बता रही है, मगर अफसोस की बात यह है कि जब ऐसे कथित खेल लोगों के बीच अपनी जगह बना रहे थे, उन्हें समाज से काट रहे थे और इसके बहुस्तरीय नकारात्मक नतीजे सामने आने लगे थे, तब इसके प्रति जताई जाने वाली फिक्र की अनदेखी की गई। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि खुद सरकार ने 2023 में पैसे से जुड़े ऑनलाइन गेमिंग पर अट्ठाईस फीसद जीएसटी भी लगाया था। जबकि यह छिपा नहीं है कि ऑनलाइन गेमों की लत की वजह से कितने युवाओं के सोचने-समझने की प्रक्रिया में तेजी से बदलाव आया है। -**राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

विवाद में तल्खी

भारत में मतदाता सूची संबंधी विवाद में तल्खी का बढ़ते जाना दुखद और चिंताजनक है। दुखद इसलिए कि एक सांविधानिक संस्था की गरिमा पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है और चिंताजनक इसलिए कि विवाद समाधान की ओर बढ़ने के बजाय नई समस्याओं की ओर बढ़ रहा है। चूंकि बिहार में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित है, तो वहां जमीनी स्तर पर मतदाताओं के अधिकार को लेकर सरगर्मी तेज हो गई है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव मतदाताओं के अधिकार के लिए सड़कों पर उतर गए हैं। जब बिहार में आनन-फानन में मतदाता पुनरीक्षण का काम शुरू हुआ था, तभी यह आशंका जताई जा रही थी। नए मतदाता जुड़ते, तो विवाद होता और जब 65 लाख के करीब मतदाता सूची से प्राथमिक रूप से हटाए गए हैं, तब भी नाराजगी है। अफसोस, पुनरीक्षण का शुद्ध चुनावी काम राजनीतिक मुद्दा बन गया है। केंद्र में सत्तारूढ़ दल के नेता पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु जैसे राज्यों में पुनरीक्षण की मांग कर रहे हैं, जबकि पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक ने पुनरीक्षण का विरोध शुरू कर दिया है। पुनरीक्षण जैसी अच्छी प्रक्रिया विवादों में पड़ गई है, तो यह चुनाव आयोग की ओर से तैयारी का ही अभाव है। हालांकि, मतदाता सूची संबंधी जो शिकायतें सामने आई हैं, वे नई बात नहीं हैं। अपने देश में बीएलओ (ज्यादातर सरकारी शिक्षक) और बीएलए (राजनीतिक कार्यकर्ता) का जो कार्य स्तर है, उसके प्रति बहुत संतोष नहीं जताया जा सकता। कुछ काम प्रशिक्षण के अभाव में बिगड़ते हैं, तो कुछ कामों पर लापरवाही या उदासीनता हावी हो जाती है। ऐसे में बीएलओ और बीएलए, दोनों की कमियों का ठीकरा चुनाव आयोग पर फूटता है। भारत जैसे देश में वैसे भी चुनाव कराना आसान नहीं है। यहां कोई भी पहचान पत्र पुख्ता नहीं है। सबकी कमियों के दृष्टांत समय-समय पर सामने आते रहते हैं। जाहिर है, पहचान पत्र बनाने वाली एजेंसियों में कमी है और यह कोई बहुत चौंकाने वाली बात नहीं है। डिजिटल दौर में, राशन कार्ड का मामला हो या बीपीएल कार्ड का, पूरी सच्चाई या पूरी ईमानदारी की गारंटी लेना किसी भी भारतीय सांविधानिक संस्था के लिए बहुत मुश्किल है। अब सवाल यह उठता है कि क्या हमारी सांविधानिक संस्थाओं की इस कमी या मजबूरी को हमारी राजनीतिक पार्टियां समझती हैं? क्या कमियों को सुधारने के बजाय उनका लाभ उठाने का इरादा ज्यादा हावी है? यहां यह बात छिपी नहीं है कि अपने देश में अनेक चुनावी सुधार न्यायालयों के हस्तक्षेप से ही संभव हुए हैं। हमारी प्रचलित राजनीतिक परंपरा में सुधार की राजनीतिक मंशा बेहद कमजोर है। सुधार की उपेक्षा का ही फल है चुनाव को लेकर फैली कटुता। इसकी किसे परवाह है कि मतदाता सूची विवाद के आरोप की वजह से दुनिया में भारतीय लोकतंत्र का कितना मखौल उड़ रहा है? क्या कोई ऐसी बड़ी सियासी पार्टी है, जो अभी संपूर्ण चुनाव सुधार का वादा कर रही हो? आज जब सत्ता पक्ष को भी शिकायत है और विपक्ष को भी, तब क्या हम पूरे देश में गहन मतदाता सूची पुनरीक्षण के लिए तैयार हैं? बेशक, चुनाव आयोग को इस दिशा में कदम उठाने ही चाहिए। कुछ वक्त भले लग जाए, पर मतदाता सूची सोलह आना सही होनी चाहिए। यह काम बहुत बड़ा है, शायद इसे मुमकिन बनाने के लिए देश को लगातार टी एन शेषन जैसे दो-तीन तेजतर्रार मुख्य चुनाव आयुक्तों की जरूरत पड़ेगी।

राग ओर मोह ही संसार में हमारे दुःख और संताप का कारण : मुनि अनुपम सागर

श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में संयम भवन में वर्षायोग प्रवचन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। संसार में राग ओर मोह ही हमारे दुःखों ओर संताप का कारण होता है। अयोग्य व्यक्ति इसके जाल से बाहर नहीं निकल पाते ओर दुःख व पीड़ाओं से परेशान रहते है। मोह पैसे से लेकर संतान तक किसी का भी हो सकता है। धतराष्ट्र ने पुत्र मोह के वशीभूत होकर ही नीति की बातो को नकार दिया ओर द्रोपदी की रक्षा नहीं कर पाए। वर्तमान में भी इसी तरह के मोह के कारण परिवारों में अलगाव ओर बिखराव की नौबत आ रही है। ये विचार श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित श्री सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में वर्ष 2025 का चातुर्मास कर रहे पट्टाचार्य आचार्य विशुद्धसागर महाराज के शिष्य मुनि अनुपम सागर ने शुक्रवार को संयम भवन में चातुर्मासिक (वर्षायोग) प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मोह हमारे कर्मो के बंध का कारण बनता है। मोह के कारण व्यक्ति भला बुरा भी नहीं सोच पाता है ओर गलत रास्ते पर आगे बढ़ जाता है। मोह के कारण ही चार दिन की चांदनी के पीछे 40 वर्षो के सम्बन्धों का कोई महत्व नहीं रह जाता है। महाराजश्री ने कहा कि संसार का मोह त्याग धर्म के मार्ग पर बढ़ने का रास्ता जिनवाणी बताती है। अधूरे ज्ञान से मंजिल प्राप्त नहीं की जा सकती। जिनवाणी सुनकर हम अपनी आत्मा को जागृत कर मोह के आवरण से मुक्त हो सकते है।

वात्सल्य सेवा समिति द्वारा किया पौधा वितरण कार्यक्रम का आयोजन

आगरा. शाबाश इंडिया

वात्सल्य सेवा समिति द्वारा समिति की सदस्य बबिता जैन के निवास स्थान 32 फेस-1 मारुति स्टेट शाहगंज पर शुक्रवार को पौधा वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ हुआ जिसके बाद उपस्थित सभी सदस्यों को वात्सल्य सेवा समिति की ओर से एक-एक पौधा वितरित किया गया । और सभी सदस्यों ने एक स्वर में पौधों को संरक्षित एवं संवर्धित करने का संकल्प लिया।पर्यावरण संतुलन के लिए पौधारोपण आज की आवश्यकता है असंतुलन की स्थिति प्रायःयह देखा जा रहा है कि बादल फटने की घटनाएं पहले से ज्यादा बढ़ी है जिससे बाढ़ का खतरा बढ़ा है और जन-धन की भी हानि की घटना भी कई जगह हुई है,जोकि चिंता का विषय है। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष रश्मि जैन ने सभी का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा पर्यावरण संतुलित रहेगा तो जीवन सुरक्षित रहेगा और सुख शांति और समृद्धि बनी रहेगी।अंत में उन्होंने अपनी वाणी को विराम देते हुए कहा पौधे धारा के भूषण हैं, करते दूर प्रदूषण हैं इस मौके पर अध्यक्ष रश्मि जैन,बबिता जैन,उपासना जैन,मानवी जैन,पुष्पा जैन,शिवानी जैन,रिंकी जैन,प्राची जैन,अंजू जैन,सुनीता जैन, रतिभा जैन,निशा जैन,नंदिनी जैन, रागिनी जैन,रीता जैन,मोना जैन,रचना जैन, समस्त वात्सल्य सेवा समिति की सदस्य उपस्थिति रही।

रिपोर्ट रश्मि जैन अध्यक्षः शुभम-जैन मीडिया प्रभारी

मां की ममता अनमोल,जीवन में नहीं चुका सकते मां के उपकारों का ऋण : कुमुदलताजी म.सा.

650 से अधिक सामूहिक तेला तप, तपस्वियों की अभिनंदन यात्रा निकाली

महासाध्वी कुमुदलताजी म.सा. के सानिध्य में अरिहन्त भवन में पर्युषण पर्व की आराधना

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

अनुष्ठान आराधिका ज्योतिष चन्द्रिका महासाध्वी डॉ. कुमुदलताजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति द्वारा सुभाषनगर श्रीसंघ के तत्वावधान में दिवाकर कमला दरबार में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के अष्ट दिवसीय आध्यात्मिक आयोजन के तीसरे दिन शुक्रवार को अरिहन्त भवन में जिनवाणी श्रवण करने के लिए श्रावक-श्राविकाएं उमड़े। इस दौरान 650 से अधिक तेला तपस्वियों ने महासाध्वी मण्डल के मुखारबिंद से तेला तप के प्रत्याख्यान लिए तो अनुमोदना में जयकारे गूंज उठे। महासाध्वी मण्डल की प्रेरणा से तपस्या करने वालों में बच्चों से लेकर बुर्जुग तक हर उम्र वर्ग के श्रावक-श्राविकाएं शामिल थे। प्रवचन से पूर्व सामूहिक तेला तप करने वाले तपस्वियों की भव्य अभिनंदन यात्रा सुभाषनगर में लॉयन्स आई हॉस्पिटल के पास से अरिहन्त भवन तक निकाली गई। धर्मसभा में साध्वी कुमुदलताजी म.सा. ने ''दान की मिसाल देवकी रानी ममता की मिसाल मां'' एवं साधना की सरगम गज सुकुमाल विषय पर प्रवचन में कहा कि जीवन में मां की ममता अनूठी व अनमोल होती है ओर जीवन में उससे बड़ा कोई नहीं हो सकता। मां के उपकारों का ऋण जीवन में कोई नहीं चुका सकता। मां जन्मदात्री होने के साथ हमारी शक्ति का स्रोत होता है। आत्मा हो या परमात्मा सभी में मां शब्द का समावेश है। उन्होंने मां की महिमा की व्याख्या करते हुए कहा कि मां दो ही मौके पर रोती है जब बेटी घर छोड़ती है या बेटा मां को छोड़ देता है। माता-पिता सारे दुःख झेलकर भी संतान को सुख देने का प्रयास करते है ओर कंकर से शंकर बना देते है। वह संतान दुर्भाग्यशाली होती है जो अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ते है। मां क्या होती यह उससे पूछे जिससे मां की ममता नहीं मिली। साध्वी कुमुदलताजी ने सभी को संकल्प कराया कि वह घर में रहने वाले माता-पिता ओर सास-ससुर को प्रतिदिन प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। धर्मसभा में स्वर साम्राज्ञी महासाध्वी महाप्रज्ञाजी म.सा. ने मां की ममता ओर भावनाओं को प्रदर्शित करने वाले मधुर प्रेरणादायी गीतों व भजनों की प्रस्तुति दी। धर्मसभा में वास्तुशिल्पी पद्मकीर्तिजी म.सा. ने अतंगडदशा सूत्र के मूल पाठ का वाचन एवं विवेचन करते हुए तीसरे अध्याय में शामिल गज सुकुमाल की कथा सुनाते हुए कहा कि संयम बहुत कठिन होता है लेकिन जब इसकी भावना बन जाए तो फिर रोका नहीं जा सकता है। गज सुकुमाल को संयम आराधना करते हुए कई कष्ट सहने पड़ते है पर वह समभाव से सब कुछ सहन कर लेते है। दोपहर में विद्याभिलाषी राजकीर्तिजी म.सा. द्वारा कल्पसूत्र का वांचन किया गया। अतिथियों का स्वागत आध्यात्मिक चातुर्मास आयोजन समिति के अध्यक्ष दौलतमल भड़कत्या एवं अन्य पदाधिकारियों ने किया। संचालन चातुर्मास समिति के सचिव राजेन्द्र सुराना ने किया। तेला तप करने वाले तपस्वियों के सामूहिक पारणे शनिवार सुबह 7 बजे से सुभाषनगर स्थानक में होंगे। प्रवचन के बाद अरिहन्त भवन में माता पद्मावती की आराधना करते हुए एकासन विधि वास्तुशिल्पी साध्वी पद्मकीर्तिजी म.सा. ने सम्पन्न कराई। एकासन आराधना का लाभ बलवीरदेवी मदनलालज,नेहा संजय,नीतू अजय चौरड़िया परिवार ने प्राप्त किया। लाभार्थी परिवार का स्वागत चातुर्मास समिति के महावीर बाबेल, हेमन्त कोठारी,निर्मला भड़कत्या आदि पदाधिकारियों ने किया।

श्री महावीर कॉलेज में एमबीए, एमसीए, तथा स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम "आरंभ" का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री महावीर कॉलेज के महावीर सभागार में एमबीए, एमसीए, तथा स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम 'आरंभ' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व प्रोफेसर रमेश अरोड़ा (राजस्थान विश्वविद्यालय), डॉ. कमलिनी द्रविड़ (प्रोग्राम डायरेक्टर मैनेजमेंट डेवलपमेंट एकेडमी), श्री महावीर कॉलेज एडवाइजर प्रोफेसर राजीव जैन (पूर्व वाइस चांसलर), महावीर दिगंबर जैन शिक्षा परिषद के अध्यक्ष उमरावमल संघी, मानद मंत्री सुनील बख़्शी, संयुक्त सचिव कमल बाबू जैन, कोषाध्यक्ष महेश काला, कॉलेज कन्वीनर प्रमोद पाटनी, राजेंद्र बिलाला, मुकेश सोगानी,विनोद जैन कोटखावदा एवं शिक्षा परिषद के अन्य गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रो. रमेश अरोड़ा का पारंपरिक स्वागत तिलक, माला एवं शॉल पहनाकर किया गया। वे पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एवं पर्सनल डेवलपमेंट के प्रतिष्ठित विद्वान हैं। अपने प्रेरणादायी संबोधन में उन्होंने प्रशंसा के महत्व और आलोचना के संभावित दुष्परिणामों को उजागर किया। उन्होंने बच्चों को यह सिखाया कि कब और कैसे प्रशंसा करनी है तथा किस स्थिति में आलोचना करनी चाहिए। डॉ. कमलिनी द्रविड़ ने संबोधन में विद्यार्थियों को 'मोटिवेशन की शक्ति' और 'सफलता प्राप्त

करने' के महत्व के बारे में समझाया। शिक्षा परिषद के मानद मंत्री सुनील बख़्शी ने अपने विचार रखते हुए विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आशीष गुप्ता ने विद्यार्थियों को संस्थान की कार्यप्रणाली से परिचित कराया एवं उनके भविष्य निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में कॉलेज कन्वीनर प्रमोद पाटनी के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम के अंत में अव बैंक की ओर से प्रो. रमेश अरोड़ा द्वारा लिखित पुस्तक विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह स्वरूप भेंट की गई।

निष्काम भाव से की गई भक्ति सुमेरु पर्वत के समान विशाल फल देने वाली होती है: आर्यिका सुरम्य मति माताजी

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे के पार्श्वनाथ चैताल्य में विराजमान आर्यिका सुरम्यमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में पावन चातुर्मास 2025 में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि आर्यिका सुरम्य मति माताजी के नियमित प्रवचन श्रृंखला में मंगल कारी अमृतवाणी से प्रभावित होकर सारा सकल जैन समाज ज्ञानामृत ग्रहण करते हुए धर्म लाभ प्राप्त कर रहा है, कार्यक्रम में आज खचाखच भरी धर्म सभा में श्रृद्धालुओं को बताया कि मनुष्य को सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान,सम्यक आचरण धारण करना चाहिए, जो मोक्ष प्राप्ति के लिए जैन दर्शन के अनुसार आवश्यक रत्नत्रय है। सम्यक दर्शन का अर्थ सत्य का यथार्थ ज्ञान एवं सही दृष्टि रखना, जिससे भ्रम और मिथ्या विश्वास दूर हो जाते हैं, सम्यक ज्ञान का अर्थ है धर्म के सिद्धांतों को गहराइयों को समझना, और सम्यक आचरण का अर्थ है उस ज्ञान को अपने जीवन में उतरना, अर्थात यह तीनों मोक्ष प्राप्ति के लिए जैन दर्शन में आवश्यक है, इसी कड़ी में उन्होंने बताया कि मनुष्य को दूसरे की कमी देखना गलत आदत है , मनुष्य को केवल स्वयं की कमी देखना चाहिए स्वयं की कमी देखकर सुधार करने से ही सच्चा सुख मिलता है, हमें अपने दोषों को सुधारने का प्रयास करना चाहिए, ऐसा करने से व्यक्ति खुद में बड़ा बदलाव ला सकता है, और अपने जीवन को बेहतर बना सकता है , दूसरों में कमियां निकालना आसान है , लेकिन अपनी कमियों को स्वीकार करके उन पर काम करना मुश्किल काम है, जिसके लिए अहंकार का त्याग करना पड़ता है, कार्यक्रम आगे बताया कि राई के समान जिनेंद्र भगवान की आंतरिक भाव से, निरपेक्ष भाव से,निष्काम भाव से की गई भक्ति सुमेरु पर्वत के समान विशाल फल देने वाली होती है, निष्काम भाव का अर्थ है बिना किसी फल की इच्छा किए भगवान की भक्ति करना, इसका मतलब है कि भक्त भगवान से किसी भी प्रकार की भौतिक या सांसारिक वस्तु की कामना नहीं करता, बल्कि केवल भगवान के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव रखता है।

किताबें इसलिए भी पढ़िए

विजय गर्ग

आजकल बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के स्मार्ट सीईओ हर हफ्ते एक किताब पढ़ते हैं। जी हां! हर हफ्ते एक किताब । वे पढ़ने से प्यार करने लगे हैं और ज्यादा से ज्यादा पढ़ना चाहते हैं। येल यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार, जो लोग किताबें पढ़ते हैं, वे उन लोगों के मुकाबले दो साल अधिक जीवित रहते हैं, जो बिल्कुल नहीं पढ़ते। रिपोर्ट कहती है कि शुरू से अंत तक किताब पढ़ने से भावनात्मक बौद्धिकता और समानुभूति को काफी बढ़ावा मिलता है, यानी खाली वक्त में टीवी देखना या सोशल मीडिया पर स्क्रॉलिंग करना आपको स्मार्ट नहीं बनाता, इसलिए इस वक्त को किताबें पढ़कर उत्पादक बनाइए । पढ़ने की यह आदत गहरी नींद में सहायक है। अच्छी नींद के लिहाज से दो चीजों का प्रबंधन काफी अहम होता है- रोशनी और आवाज। तमाम डिजिटल उपकरण, जैसे स्मार्टफोन, टीवी, टैबलेट आदि प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। इनके प्रकाश में स्पेक्ट्रम का एक नीला हिस्सा होता है, जो समस्या बढ़ाने वाला है, क्योंकि यह नीला हिस्सा आपको अधिक चौकस रखता है और गहरी नींद के लिए जरूरी मेलाटोनिन हार्मोन के उत्पादन को कम कर देता है। अगर आप इस माहौल में भी सो लेते हैं, तब भी गुणवत्तापूर्ण नींद नहीं ले पाएंगे, जो आपके शरीर की जरूरत है। फिर किताबें प्रकाश का उत्सर्जन भी नहीं करतीं, जो आपकी आंखों में तनाव पैदा कर सके। दुनिया की अनेक ब्लॉकबस्टर फिल्में मशहूर कहानियों पर आधारित हैं। लेकिन अब भी अनगिन शानदार कहानियां परदे से दूर किताबों में ही दर्ज हैं और आप उनसे वंचित हैं। मसलन, महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन, नेल्सन मंडेला जैसी कई हस्तियों ने इस दुनिया को बदला है और ऐसी कोई फिल्म उपलब्ध नहीं, जो उनके संघर्ष की सही मायने में व्याख्या करती । आप उनकी आत्मकथाएं या जीवनियां पढ़ेंगे, तो आपको उससे एक दृष्टि मिलेगी और उनका अनुभव आपके साथ होगा। शोधों से पता चला है कि उतार-चढ़ाव से भरे विवरणों वाली किताबें पढ़ने से मानव मस्तिष्क की संज्ञानात्मक प्रणाली पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। किसी किताब को पढ़ने से आपको जो आनंद और अनुभव मिलता है, वह कितना टिकाऊ है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने उस किताब को कितना वक्त दिया। यदि आप उसे पढ़ते हुए आनंद ले रहे हैं, उसमें दर्ज हरेक विवरण पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और हर किरदार को उसकी स्थिति में समझने की कल्पना कर रहे हैं, तो इसका स्थायित्व अधिक होगा और आनंद भी हफ्तों बना रहेगा। किताबों का अध्ययन आपके शब्दों के खजाने को ही समृद्ध नहीं करता, बल्कि यह दिमाग की मांसपेशियों का व्यायाम भी है। -**विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

मन की विशुद्धि व संयम साधना ही दसलक्षण पर्व की सार्थकता

28 अगस्त से 6 सितम्बर तक विशेष

संजय जैन बड़जात्या कामां

दस धर्म एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जिन्हें दसलक्षण पर्व में जैन श्रावक पालन करते हैं। जैन दसलक्षण पर्व वर्ष में तीन बार आते हैं लेकिन भाद्रपद मास में आने वाले दसलक्षण पर्व का दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के लिए खास महत्व है। इस वर्ष भी भाद्र पद सुदी पंचमी से चौदस अर्थात 28 अगस्त से 06 सितम्बर तक दिगम्बर जैन सम्प्रदाय द्वारा पर्युषण अर्थात दसलक्षण पर्व मनाये जा रहे हैं।इस पर्व में तन, मन की शुद्धि के साथ मानसिक विशुद्धि का भी विशेष ध्यान रखा जाता है। दिगम्बर संप्रदाय में इसे दसलक्षण धर्म भी कहा जाता है जिसमें श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग,आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दस धर्म का क्रमशः बड़े ही मनोभाव और आराधना के साथ पालन किया जाता है।और इन दस दिनों में जैन श्रावक श्राविकाएं सात्विक जीवन व्यतीत करते हैं। जैन धर्म में जो दस धर्म (लक्षण)बताये गये हैं उसके माध्यम से जानते हैं कि कैसे हर जीव अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है और इनका पालन करने से हमारी आत्मा को पवित्र बनाने के साथ मोक्ष मार्ग पर बढ़ सकते हैं। आज अगर हर जीव इन दस धर्मों को अपनी आत्मा में धारण करले तो निश्चित ही हर जीव का चित्त शांत और आकुलता रहित हो जाये। लेकिन बढ़ती आपाधापी में बेचैन मनुष्य, शरीर को ही आत्मा मानकर अपने आत्म स्वरूप को भूल गया है। दस लक्षण में...

पहला धर्म है: उत्तम क्षमा है अर्थात व्रतों की शुरूआत ही अगर हम हमारी गलतियों के लिये सच्चे दिल से प्रायश्चित(क्षमा) मांगकर करें तो हमारी आत्मा निश्चित ही हमारे द्वारा लिये हुये व्रत और नियम पूरा करने के लिये पवित्र हो जाती है और हम आत्म धर्म की राह पर एक कदम आगे बढ़ जाते हैं।

दूसरा धर्म है: मार्दव अर्थात मधुरता, कोमलता। वाणी ऐसी हो जो रिश्तों में मिठास लाती हो। ऐसी वाणी बोलिये ,मन का आपा खोय औरन को शीतल करे ,आपहु शीतल होय।।लेकिन व्यवहार में देखने में आता है कि घर परिवार रिश्ते नाते सब वाणी के बड़बोलेपन और अहंकार के कारण टूट रहे हैं।सात जन्मों का रिश्ता सत्तर दिन भी नहीं चल पा रहा है इसलिये अगर पारिवारिक ढांचा और दाम्पत्य जीवन को बनाये रखने के लिये क्षमा के साथ -साथ दसलक्षण के दूसरे धर्म मार्दव को भी अंगीकार करें तो हमारे परिवार बिखरने से बच जायेंगे।

तीसरा धर्म है: आर्जव अर्थात सरलता, सीधापन सांसारिक क्रियाकलापों में झूठ ,फरेब बहुत बढ़ गया है कि सरल और सीधे लोगों को बेवकूफ समझा जाता है उनकी बातों को कोई गंभीरता से नहीं लेता। सरल होना अच्छी बात है लेकिन जिन लोगों की वाणी में निडरता और क्षाम्य गुण के साथ सरलता होती है वही लोग सही मायने में आर्जव धर्म को अपना पाते हैं ।

चौथा धर्म है सत्य: जिन शास्त्रों में जिनेन्द्र प्रभू द्वारा सत्य वचन कहे गये हैं ।उन सारगर्भित सत्य वचनों पर चलकर ही हमारी आत्मा सम्यक ज्ञान, दर्शन व चरित्र को प्राप्त कर सकती है।

पांचवां धर्म है: शौच अर्थात जितना हमें भगवान ने दिया है उसी में संतुष्ट रहना। पंचम काल में विरले लोग हैं जो कम में ही संतुष्ट रहते हैं। आज का मनुष्य अपने दुख से इतना दुखी नहीं है जितना दूसरों के सुख से दुखी होता है इसलिये शौच धर्म को अपनाने से ही जीवन में संतोष रूपी धन आ सकता है।जब आवे संतोष धन ,सब धन धूलि समान।

छठा धर्म है: संयम अर्थात मन पर अंकुश गृहस्थ व संसार में होने वाले हर क्रियाकलाप खाने , पीने , सोने , पहनने में संयम रखना । जो लोग अपने जीवन में संयम रखते हैं उनका अंतिम समय बहुत ही शांति पूर्वक भगवान के स्मरण में ही निकलता है। इसलिये बचपन से ही छोटे- छोटे नियम लेकर हम जीवन के हर क्रियाकलाप में संयम रखना सीख सकते हैं

सातवां धर्म है तप: तप का मतलब घंटों बैठकर जाप करना नहीं है बल्कि अपने जीवन में उस आनंद को लाना है जहां मन में राग , द्वेष ,मोह ,माया और अपने पराये का भेद खत्म हो जाता है और यह सब तब आता है जब आदमी अपनी आत्मा में स्थित होता है

आठवां धर्म है: त्याग । कुछ लोग अपने जीवन काल में अपनी सामर्थ्य के अनुसार त्याग करते हैं ।समय समय पर दान करते हैं जरुरत मंद की मदद करते हैं। त्याग का सीधा अर्थ दान करने से लगाया जा सकता है।

नौवां धर्म है: आकिंचन्य अर्थात इस संसार में भगवान और आत्मा के अलावा कुछ भी शाश्वत नहीं है ।

यह जानते हुए भी मनुष्य रात- दिन ज्यादा से ज्यादा परिग्रह की चिंता में लगा रहता है और आगे आने वाली सात पीढ़ियों के लिये इकट्ठा करता रहता है।

इसलिये दस धर्मों में आकिंचन्य और अपरिग्रह को भी प्रमुखता दी गयी है। अंतिम लक्षण है ब्रह्मचर्य अर्थात अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने के लिये सांसारिक जीवन से मुक्ति। इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण रखते हुये ,सांसारिक गतिविधियों में भटके बिना परमात्मा का स्मरण करना ही ब्रह्मचर्य है। ये सभी दस धर्म (लक्षण) एक- दूसरे से जुड़े हुये हैं । हमारे आचरण में अगर क्षमा का समावेश हो जाता है तो बाकी गुण सहज ही हमारे जीवन में परिलक्षित होने लगते हैं। हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं।आत्म धर्म की राह पर चल सकते हैं।

-संजय जैन बड़जात्या कामां,राष्ट्रीय प्रचार मंत्री धर्म जागृति संस्थान

मर्यादा न भूलें

मनुष्य के जीवन में मर्यादा का महत्व सर्वोपरि है। मर्यादा वह सीमा है जो हमें अनुशासन, संयम और आदर्श की ओर ले जाती है। बिना मर्यादा के जीवन अव्यवस्थित और दिशाहीन हो जाता है। मर्यादा केवल धार्मिक या सामाजिक नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे विचार, व्यवहार और आचरण में प्रकट होती है। परिवार में मर्यादा का पालन करने से आपसी संबंध मजबूत रहते हैं। समाज में मर्यादा का पालन करने से विश्वास और सम्मान की भावना बनी रहती है। कार्यक्षेत्र में मर्यादा का पालन करने से ईमानदारी और विश्वसनीयता कायम रहती है। हमारे शास्त्र और इतिहास इस बात के साक्षी हैं कि जिन व्यक्तियों और पात्रों ने मर्यादा का पालन किया, वे आज भी आदर्श के रूप में याद किए जाते हैं। श्रीराम को ''मर्यादा पुरुषोत्तम'' इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में मर्यादा का पालन किया। आज के आधुनिक युग में जब स्वतंत्रता को कभी-कभी स्वच्छंदता समझ लिया जाता है, तब और भी आवश्यक हो जाता है कि हम मर्यादा की सीमा को न भूलें। स्वतंत्रता का अर्थ अनुशासनहीनता नहीं, बल्कि कर्तव्य और अधिकारों का संतुलन है। मर्यादा हमें यह सिखाती है कि वाणी में शिष्टता हो। व्यवहार में सरलता हो। संबंधों में विश्वास हो। जीवन में संयम और धैर्य हो। अतः जीवन की सफलता, शांति और प्रतिष्ठा का आधार मर्यादा ही है। जो मर्यादा को निभाता है, वही समाज और परिवार में आदर का पात्र बनता है। मर्यादा न भूले – यही जीवन का वास्तविक सौंदर्य है। **अनिल माथुर जोधपुर (राजस्थान)**

हमारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी कमजोरी कहो या गलत फहमी.. हम सोचते हैं-अभी तो समय बहुत है : अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

तरुणसागरम तीर्थ, गाजियाबाद. शाबाश इंडिया

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ तरुणसागरम तीर्थ पर वषायोग हेतु विराजमान हैं उनके सानिध्य में वहां विभिन्न धार्मिक कार्योंकम संपन्न हो रहें हैं उसी श्रुंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि हमारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी कमजोरी कहो या गलत फहमी.. हम सोचते हैं -- अभी तो समय बहुत है..! समय उस रेत के समान है जो मुट्ठी में लो तो कब खाली हो जाती है, पता ही नही चलता। अपनी ज़िन्दगी की शुरूआती और अन्तिम दौर में हमें आपको सहयोग की आवश्यकता होती है। मतलब बचपन और बुढ़ापे में आप हम सबको दूसरों की मदद और प्रेम मनुहार की जरूरत होती है। इन दोनों अवस्थाओं के मध्य से जब हम गुजरते हैं तो शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। उस समय हमें किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती है। और पड़ती भी है तो उम्र की तेज रफ्तार में वह दौर कब निकल जाता है, समझ ही नहीं पड़ता। उम्र के मध्य पड़ाव में हम प्रेम, करूणा, सेवा को महत्व नहीं देते चूंकि हमारे पास उस उम्र के दौर में समय और काम कम रहता है, भाग दौड़ ज्यादा होती है। जिस भाग दौड़ की ना मंजिल होती ना दिशा और बचा हुआ समय इसी अफसोस में गुजर जाता है। कई बार होता है समझदार लोग एक घन्टा बचाने के लिये पूरे दिन का सत्यानाश कर देते हैं। बेहतर यही होगा जिन्होंने आपको बचपन में समय, साथ, सहयोग और प्रेम दिया है आप उनको जीवन के अन्तिम दौर में उतना ही वक्त देना जितना उन्होंने आपको दिया। तब समझना जीवन का हिसाब क्लियर हो गया अन्यथा उनका ऋण हम सात जन्मों तक नहीं चुका सकते हैं। इसलिए कद्र करना सीखो जीवन के पहले और अन्तिम दौर में सहयोग देने वालों की, अन्यथा ना ज़िन्दगी वापिस आयेगी ना वे लोग...!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

महावीर इंटरनेशनल ने जीवन रक्षक किट वितरित किए

सुरेश चंद्र गांधी. शाबाश इंडिया

नौगामा बांसवाड़ा। सब की सेवा सबको प्यार महावीर इंटरनेशनल शाखा नौगामा द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय चिंच में विद्यालय के प्रधानाचार्य गोमती शंकर पयडा समाजसेवी भूपेंद्र दवे महावीर इंटरनेशनल शाखा नौगामा के अध्यक्ष सुरेश चंद्र गांधी शाखा की वीर सदस्य जगजी कटारा, शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से पधारे राजेंद्र जैन विनीत जैन के सानिध्य में जीवन रक्षक किट वितरण किए गए। सर्वप्रथम प्रार्थना भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार में के साथ उपस्थित मेहमानों का महावीर इंटरनेशनल की ओर से ऊपरना उड़ा कर सम्मान किया गया इस अवसर पर सुरेश चंद्र गांधी ने बताया कि संपूर्ण भारतवर्ष में महावीर इंटरनेशनल की ओर से जीवन रक्षक किट का वितरण किया जा रहा है इसी के तहत आज शाखा द्वारा जीवन रक्षक किट वितरण किया जा रहे हैं। इस जीवन रक्षक किट में जब कभी किसी व्यक्ति को हार्ट अटैक आने की संभावना बन रही हो उसे वक्त इन तीन प्रकार की गोलिया देने पर प्राथमिक उपचार के रूप में काम आती है एवं अस्पताल पहुंचने तक उसका जीवन बच जाएगा। हमारा प्रयास है कि इस प्रकार के जीवन रक्षक किट का अधिक से अधिक वितरण कर सके इस अवसर पर विद्यालय के प्रध्यापक ने महावीर इंटरनेशनल के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समाज सेवा का श्रेष्ठ कार्य है इस पुण्य कार्य हेतु हम इसकी सराहना करते हैं समाजसेवी भूपेंद्र दवे ने कहा कि महावीर इंटरनेशनल की सेवा कार्यों से में बहुत प्रभावित हूं मैं उनकी सेवा करो कि प्रशंसा करता हूं और मेरी ओर से 1000 जीवन रक्षक किट बांटने हेतु राशि प्रदान करता हूं एवं कार्तिक पोरवाल राजस्थान ग्रामीण बैंक नोगामा की ओर से 1100 किट वितरण हेतु राशि प्रदान की गई इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल की ओर से 50वीं गोल्डन जुबली पर प्रकाशित महावीर प्रवाह का नवीन अंक सभी को भेंट किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के स्टाफ साथी चेतना जोशी कोदर पटेल गायत्री देवी जयेश पंड्या रमेश जोशी मनीष त्रिवेदी दीपावली खुशबू सुथार नरेश आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन रिया चवढ़ा द्वारा किया गया।

एक छोटा सा व्यसन एक बहुत बड़ा नशा बन जाता है: जयंत सागर जी महाराज

नांद्रे, महाराष्ट्र. शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद कोल्हापुर के कार्याध्यक्ष अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापुर ने कहा कि पट्टाचार्य विशुद्धसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री सारस्वत सागर जी महाराज,मुनि श्री जयंत सागर जी महाराज, मुनि श्री सिद्ध सागर जी महाराज और क्षुल्लक श्रुतसागर महाराज जी 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, नांद्रे में विराजमान हैं। विशुद्ध गुरू के शिष्य युवा हृदय सम्राट मुनि श्री जयंत सागर महाराज जी ने नांद्रे में अपने प्रवचन में कहा कि जीवन में जब भी कोई काम करो उसको सोचके, विचार करके करों की ये जो कार्य हम करेंगे उसका फल क्या होगा ,परिणाम क्या भुगतना होगा हमें । मित्र भी ऐसे बनाओ जो हमें बुरे कार्यो से, बुरी हरकतो से रोके । ऐसे मित्रो की संगत मत करो जो हमें व्यसनो की ओर ले जाये क्योंकि आज के युवा एवं युवतीओं की नई उम्र है और जल्दी प्रभावीत हो जाते है । अगर हम मजाक मे ही कोई व्यसन किया, ये सोच कर की रोज तो नही करना है आज ही तो करना है बस समझ जाओ आपने अपने व्यसनी होने का बीज डाल दिया है । क्योंकि एक छोटेसे कीड़े से पूरा वृक्ष समाप्त हो जाता है । अगर उसको अलग नहीं किया तो इसलिये ऐसे व्यसन मत करों जो आपको नशा करने पर आतुर करदें और नशे की लत अगर किसी को लग गई, व्यक्ती नष्ट और समाप्त करके ही मानती है । इसलिये जो कार्य करो, जिससे भी मित्रता करो, सोच समझकर करों, विचार करके करों ।

गुरु के सान्निध्य से ही खुलता है आत्मकल्याण का मार्ग: महासती विजयप्रभा

पर्युषण महापर्व का तीसरे दिन सेकड़ों भाई-बहनो ने तीन उपवास के प्रत्याख्यान लिए

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के तृतीय दिवस शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में उपप्रवर्तिनी महासती विजयप्रभा ने कहा कि बिना गुरु के शिष्य का कल्याण संभव नहीं। गुरु वह दर्पण हैं जिनमें आत्मा का वास्तविक स्वरूप दिखाई देता है। गुरु ही शिष्य को सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र की दिशा देकर मोक्षमार्ग की नींव रखते हैं। उन्होंने कहा कि सच्चा गुरु केवल बाहरी आचरण नहीं सिखाता, बल्कि भीतर से जागृत करता है कि आत्मा ही शाश्वत सत्य है और शेष सब नश्वर है। गुरु के उपदेश से जीव विकारों पर विजय पाकर त्याग, तप और साधना की ओर अग्रसर होता है। महासती विद्याश्री ने कहा कि क्रोध ही पतन का मूल कारण है। क्रोध से विवेक नष्ट होता है और जीव हिंसा व अशांति के मार्ग पर बढ़ जाता है। संयम ही वह औषधि है, जो आत्मा को शांत कर मोक्ष की ओर अग्रसर करती है। साध्वी हर्षश्री एवं साध्वी जयश्री ने कहा कि जब तक मन, वचन और काया पर संयम नहीं होता, तब तक कर्मबंधन से मुक्ति संभव नहीं।

मन ही सभी विकारों की जड़ है क्रोध, मान, माया और लोभ। यदि मन पर संयम नहीं रहा, तो वचन कटु हो जाते हैं और शरीर पापकर्म की ओर प्रवृत्त हो जाता है। संघ के मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि पर्युषण पर्व के तृतीय दिवस बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने तीन उपवास एवं अन्य तपस्याओं के साध्वीवृंद से प्रत्याख्यान ग्रहण किए। धर्मसभा में शांतिभवन के संरक्षक नवरतनमल बंब, अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद चीपड़, कंवरलाल सूरिया, हस्तीमल भलावत, शंकरलाल बाफना, भेरूलाल सुरिया, रतनलाल संचेती, बाबूलाल सूर्या, गौतम मेड़तवाल, विनोद डांगी, आशीष भलावत, अभय खाब्या, गौतम डांगी, पंकज सूरिया सहित बड़ी संख्या में श्रावक श्राविकाओं की उपस्थित रहे। सायंकाल शांतिभवन परिसर के अलग अलग जगह पर हजारों श्रावक-श्राविकाओं एवं बालक-बालिकाओं ने सामूहिक पखी प्रतिक्रमण किया। **-प्रवक्ता निलिष्का जैन**

दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के तीन दिवसीय लब्धिविधान तेला 24 अगस्त से

दशलक्षण महापर्व 28 अगस्त से, जैन मंदिरों में प्रारम्भ होगें विशेष धार्मिक आयोजन - चातुर्मास स्थलों पर लगेगे दस दिवसीय आत्म साधना शिविर

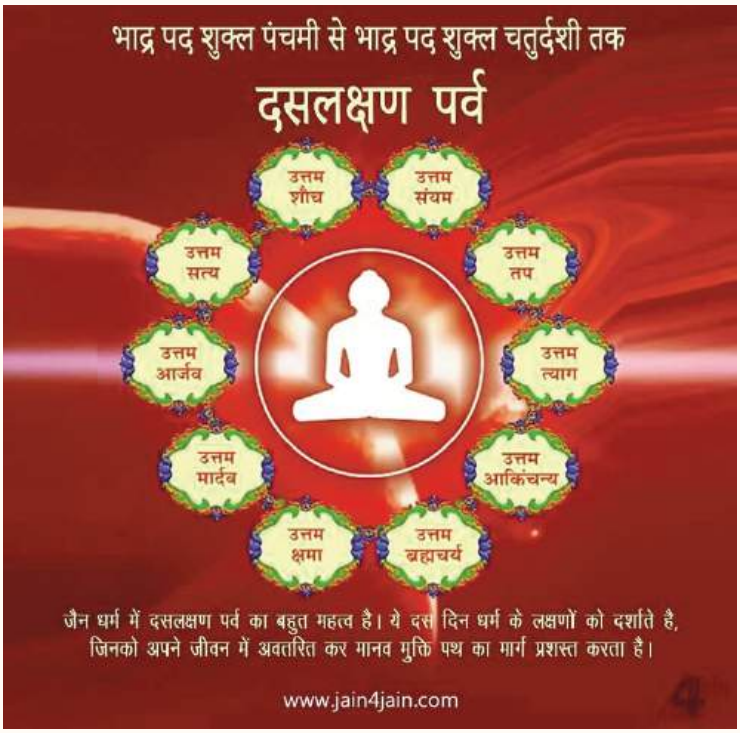

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन धर्मावलंबियों के दशलक्षण महापर्व गुरुवार , 28 अगस्त से प्रारंभ होगें जो शनिवार, 6 सितम्बर तक चलेगे। इस दौरान मंदिरों एवं चातुर्मास स्थलों पर धर्म की गंगा बहेगी। चातुर्मास कर रहे दिगम्बर जैन संतों के सानिध्य में दस दिवसीय आत्म साधना शिविर आयोजित होगें। जिनमें श्रावक गण बडी संख्या में शामिल होंगे। इससे पूर्व रविवार, 24 अगस्त से 26 अगस्त तक तीन दिवसीय लब्धिविधान तेला मनाया जाएगा। इस दौरान श्रद्धालु तीन दिन के उपवास रखेगें व विशेष पूजा अर्चना करेंगे। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के अनुसार रविवार, 10 अगस्त से षोडशकारण व्रत एवं मेघमाला व्रत प्रारम्भ हो गये जो सोमवार, 8 सितम्बर तक चलेगे। जैन धर्मावलंबी एक माह तक षोडशकारण पर्व मनायेगे। श्रावक व्रत, उपवास करेंगे तथा मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होंगे। श्री जैन के मुताबिक गुरुवार, 28 अगस्त से दशलक्षण महापर्व प्रारम्भ होगें जो शनिवार, 6 सितम्बर तक चलेगे इस दौरान शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा-पाठ, धार्मिक आयोजनों की धूम रहेगी। जैन धर्म के उत्तम क्षमा,उत्तम मार्दव,उत्तम आर्जव,उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन एवं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के दस लक्षण होते हैं। प्रतिदिन धर्म के एक लक्षण की पूजा व प्रवचन होगें। इन दस दिनों में प्रातः जैन मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा, सामूहिक पूजा, मुनिराजो की विशेष प्रवचन श्रृंखला, श्रावक संस्कार साधना शिविर, महाआरती, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होगें । धर्मावलंबी तीन दिन, पांच दिन, आठ दिन, दस दिन, सोलह दिन, बत्तीस दिन सहित अपनी क्षमता एवं श्रद्धानुसार अलग-अलग अवधि के उपवास करते हैं। जिसमें निराहार रहकर केवल मात्र एक समय पानी लेते हैं। श्री जैन के मुताबिक इससे पूर्व रविवार, 24 अगस्त से 26 अगस्त तक तीन दिवसीय लब्धिविधान तेला मनाया जाएगा। इस दौरान श्रद्धालु तीन दिन के उपवास रखेगें व विशेष पूजा अर्चना करेगें। श्री जैन के मुताबिक मंगलवार, 26 अगस्त को रोट तीज एवं चौबीसी व्रत मनाया जायेगा। इस दिन घरों में रोट खीर व तुरई का रायता बनाया जाएगा। मंदिरों में तीन चौबीसी का पूजा विधान होगा। 28 अगस्त से 1 सितम्बर तक पुष्पांजलि व्रत(फलफांदन),28 अगस्त से 6 सितम्बर तक दशलक्षण महापर्व के दौरान दशलक्षण व्रत किये जाएंगे। 30 अगस्त को निर्दोष सप्तमी,मंगलवार, 2 सितम्बर को सुगन्ध दशमी मनाई जावेगी । 4 से 6 सितम्बर तक कर्म निर्झरा तेला,5 से 7 सितम्बर तक रत्नत्रय व्रत एवं तेला,शनिवार, 6 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी एवं दशलक्षण समापन कलश होंगे। श्री जैन के मुताबिक सोमवार, 8 सितम्बर को षोडशकारण समापन कलश एवं पड़वा ढोक क्षमा वाणी पर्व मनाया जावेगा । इस मौके पर वर्ष भर की त्रुटियों एवं गलतियों के लिए आपस में क्षमा मांगेंगे, खोपरा मिश्री खिलायेगें।

विनोद जैन 'कोटखावदा': प्रदेश महामंत्री, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर

डॉ मालती गुप्ता की पुस्तक का विमोचन एशिया पैसिफिक बर्न्स एसोसिएशन की कॉन्फ्रेंस में किया गया

गोवा. शाबाश इंडिया। गोवा में 21 अगस्त से-24 अगस्त 2025 तक आयोजित 15वीं एशिया पैसिफिक बर्न्स कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन समारोह में डॉ मालती गुप्ता, पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, प्लास्टिक सर्जरी एवं बर्न्स विभाग, सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय, जयपुर, द्वारा लिखित एवं डॉ रीतिका अग्रवाल द्वारा चित्रांकित द्विभाषीय पुस्तिका ''पानी और आग-एक अनूठा संगम'' का विमोचन, डॉ विनीता पुरी,इंडिया, अध्यक्ष, एशिया पैसिफिक बर्न्स एसोसिएशन, डॉ हाजिमे मात्सुमुरा , जापान, पूर्व अध्यक्ष, एशिया पैसिफिक बर्न्स एसोसिएशन, डॉ न्योमान रियासा, इंडोनेशिया, पूर्व अध्यक्ष, डॉ राशेल कोर्नहाबेर, ऑस्ट्रेलिया सचिव, एशिया पैसिफिकबर्न्सएसोसिएशन, डॉ राजीव आहूजा, इंडिया, फाउंडर अध्यक्ष, एशिया पैसिफिक बर्न्स एसोसिएशन, डॉ.वेंकटेश्वरन, सेक्रेटरी जनरल, एशिया पैसिफिक बर्न्स कॉन्फ्रेंस, एवं डॉ नीलेश शिंदे, द्वारा किया गया। इसी कॉन्फ्रेंस में अवार्ड वीडियो सत्र के दौरान डॉ मालती गुप्ता द्वारा रचित वीडियो भी दिखाया गया।

आदर्श भगवान वह जो निंदकों से द्वेष और प्रशंसकों से राग नहीं करता : भावलिंगी संत दिगम्बराचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

दसलक्षण महापर्व में सहारनपुर वाले जानेंगे जीवनोपयोगी आत्मा के दश गुण!

सहारनपुर. शाबाश इंडिया

धर्मनगरी सहारनपुर में बीर नगर के जैन बाग जैन मंदिर में चातुर्मास कर रहे, दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महा मुनिराज ससंघ (30 पीछी) सानिध्य में धर्म श्रद्धालु दिन-प्रतिदिन बढ़-चढ़कर अपना-अपना सौभाग्य जगा रहे हैं। सहारनपुर वासियों को आचार्य भगवन् के द्वारा सुख-शान्तिमय जीवन जीने के दिव्य सूत्र प्राप्त हो रहे हैं। समाज के श्रेष्ठी वर्ग का कहना है कि हमारा जन्मों-जन्मो का सातिशय पुण्य एकत्रित होकर आचार्य गुरुवर के विशाल संघ के रूप में हमें प्राप्त हुए हैं। आचार्य प्रवर और संघ की आराधना करके हम सभी अपने जन्म और जीवन को सफल कर रहे हैं। प्रातःकाल की 08:00 बजे की श्री भक्तामर महिमा शिक्षण शिविर में उपस्थित जन समूह के बीच दिव्य देशना प्रदान करते हुए आचार्य भगवन्ने कहा बन्धुओ। हमें अपने आत्मा का हित करने के लिए एक ऐसे आत्मा की खोज करना होगी जिस आत्मा ने अपने अंदर से राम-देव मोह आदि समस्त विकारों को नष्ट करके आत्मा की परम अवस्था को प्राप्त कर लिया हो। जो अपने प्रशंसकों-पूजकों से प्रसन्न नहीं होता और अपने निंदकों से द्वेष-क्रोध नहीं रखता अपितु दौनों को तथा सम्पूर्ण समष्टि को आत्मा के ज्ञान-दर्शन गुण से मात्र जानते देखते हों। इन गुणों के धारी इस लोक में वीतराग, सर्वज्ञ, हितोपदेश गुणों से विभूषित आत्मा ही हो सकते हैं। जो स्वयं अपनी आत्मा का पूर्ण हित कर चुके हैं अर्थात निराकुल मोक्षसुख को प्राप्त कर चुके हैं ऐसे गुणमय भगवान ही हमारे आदर्श होना चाहिए। निश्चित ही हम जिन्हें अपना आदर्श मानते हैं और उनके द्वारा दशार्ये गये मार्ग पर चलते हैं तब हम भी वही प्राप्त कर लेने हैं जो हमारे आदर्श प्रभु ने प्राप्त किया है। जैन धर्म की विशेषता बताते हुए आचार्य श्री कहते हैं। ''जो वस्तु जैसी है उसे वैसी ही स्वीकारना, यही जैन धर्म है।'' लोक में जीव नामक वस्तु (द्रव्य) है। हम और आप सब वही जीव द्रम हैं। ऐसे जीव द्रव्य सम्पूर्ण लोक में अक्षय-अनंत हैं। सबका जीव द्रव्य अपना-अपना स्वतंत्र है। कोई भी जीव किसी अन्य के द्वारा संचालित नहीं है। सभी जीव अपने-अपने कर्म अनुसार संसार में ही सुख-दुःख रूप फलों का भोग करते रहते हैं। सत्कर्म एवं धर्म के आश्वय से एक दिन कर्म से भी मुक्त होकर परम सुख को प्राप्त कर लेते हैं। 28 अगस्त से 06 सितम्बर तक आ रहे हैं- पर्वसज पर्युषण महापर्व । सहारनपुर में लग रहा है 'उपासक धर्म संस्कार शिविर।'

बिना चारित्र के मिले ज्ञान से, संसार सागर से मुक्ति नहीं मिलती : मुनिश्री विलोकसागर

मनोज जैन नायक. शाबाश इंडिया

मुरैना। आध्यात्मिक वर्षायोग में प्रतिदिन चल रही प्रवचनों की श्रृंखला में बड़े जैन मंदिर में चातुर्मासरत जैन संत मुनिश्री विलोकसागरजी महाराज ने ग्रन्थराज समयसार की विवेचना करते हुए कहा कि ज्ञान प्राप्त करना, ग्रंथों का, शास्त्रों का अध्ययन करना तो सहज और सरल है। शास्त्रों और ग्रंथों का अध्ययन करना भी सहज और सरल है । ज्ञान तो प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन कोरे ज्ञान को प्राप्त करने से आत्मा का भला होने वाला नहीं हैं। ज्ञान तो हम सभी प्राप्त कर सकते है, लेकिन वह ज्ञान जब तक चारित्र में नहीं आएगा तब तक हमारा कल्याण होना संभव नहीं हैं। जब तक हमें सच्चे ज्ञान की, सही ज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी, उस ज्ञान को, उन सिद्धांतों को हम चारित्र में नहीं उतारेंगे, तब तक हम यूहीं इस संसार के जन्म मृत्यु के चक्रव्यूह में भटकते रहेंगे । जब ज्ञान चारित्र में आता है तो राग द्वेष स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं, निज और पर समझ में आ जाते हैं । आत्मा का हित क्या है, इसका भाव समझ में आ जाता है। संसार से विरक्ति होकर आत्मा अपने में लीन होने का प्रयास करती है। यही मोक्ष मार्ग है। जब राग द्वेष पूर्णतः समाप्त हो जाता है और आत्मा अष्ट कर्मों को नष्टकर सिद्धत्व को प्राप्त कर लेती है। मुनिश्री ने कहा कि जैन दर्शन में चारित्र का गहरा संबंध है । चारित्र, आत्मा के शुभ या शुद्ध आचरण और संयम को कहते हैं, जो मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक है । यह जैन धर्म का मूलभूत सिद्धांत है, जो अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह जैसे व्रतों का पालन करके प्राप्त होता है। चारित्र का अर्थ है पाप वृत्तियों का त्याग कर आत्म-शुद्धि की ओर बढ़ना, जो सम्यक चारित्र के रूप में जीवन के सभी पहलुओं में नैतिक आचरण को अपनाना सिखाता है। जैन दर्शन के अनुसार, चारित्र आत्मा की विभाव (अशुद्ध) अवस्था से स्वभाव (शुद्ध) अवस्था की ओर बढ़ना है। मोक्ष मार्ग एक ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा आत्मा जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करती है।

अमेज-एड फेस्ट राजस्थान के पहले एडवरटाइजिंग फेस्टिवल का हुआ शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

एरीना एनीमेशन जयपुर के द्वारा आयोजित अमेज-एड फेस्ट 2025 - राजस्थान का पहला एडवरटाइजिंग फेस्टिवल का आयोजन राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में सुबह 10 बजे शुरू किया गया। यह दो दिवसीय फेस्टिवल एनिमेशन और डिजाइनिंग इंडस्ट्री के प्रति जागरूकता बढ़ाने और छात्रों के उत्कृष्ट कैरियर के अवसरों को उजागर करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

मुख्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर किया कार्यक्रम का शुभारंभ

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सिविल लाइन विधायक डॉ गोपाल शर्मा, विशिष्ट अतिथि भारतीय सेना के वीएसएम मेजर जनरल अनुज माथुर एवं रोटरी क्लब मिडटर्म के महासचिव डॉ. आदित्य नाग ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्य अतिथियों ने स्टूडेंट्स के द्वारा लगाई गई ग्राफिक्स डिजाइन, डिजिटल पेंटिंग, मेट पेंटिंग, एडवरटाइजिंग, कोमिंग डिजाइन की प्रदर्शनी का अवलोकन कर उनकी सराहना की।

प्रतिभागियों को मिलेगा गतिविधियों का अनुभव

इस कार्यक्रम की आयोजिका श्रीमती रोलिका सिंह ने बताया कि आयोजन में भाग लेने वाले 400 स्टूडेंट्स अपने ग्राफिक्स डिजाइन, डिजिटल पेंटिंग, मेट पेंटिंग, एडवरटाइजिंग, कोमिंग डिजाइन की प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में हजारों की संख्या आने वाले प्रतिभागियों को एड म्यूज़ियम, छात्र प्रदर्शनी, लाइव क्रोमा शूट, सेमिनार और वर्कशॉप्स जैसी गतिविधियों का अनुभव मिला। इससे युवा प्रतिभाओं को क्रिएटिव इंडस्ट्री की वास्तविक दुनिया, नवीनतम तकनीकों और पेशेवर कौशल से परिचित होने के अवसर का भी लाभ मिला।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिली प्रेरणा

इस आयोजन की आयोजिका श्रीमती रोलिका सिंह पिछले 25 वर्षों से एरीना एनीमेशन पर जयपुर में काम रही हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन युवा प्रतिभाओं को अपने हुनर को प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करता हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा एवीजी सी इंडस्ट्री की अहमियत बताने के बाद, श्रीमती सिंह विशेष रूप से समाज में इस क्षेत्र की जागरूकता फैलाने के लिए सक्रिय रही हैं।

राजस्थान का पहला एडवरटाइजिंग फेस्टिवल

अमेज-एड फेस्ट 2025 राजस्थान का पहला एडवरटाइजिंग फेस्टिवल है जो सभी क्रिएटिव छात्रों, पेशेवरों, उद्यमियों और आम जनता के लिए खुला है। यह आयोजन जयपुर शहर में क्रिएटिव इंडस्ट्री की चमक और रचनात्मकता को बढ़ावा देने का एक प्रमुख अवसर साबित होगा।

विशिष्ट अतिथियों से मिल रहा है मार्गदर्शन

इस अवसर पर विशेष अतिथियों में ओएसए फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुन सर, सॉफ्ट हॉकी के अध्यक्ष डॉ. आशुतोष पंत, एप्टेक लिमिटेड के सीबीओ संदीप वेलिंग, राजस्थान चौंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष डॉ. के.एल. जैन, चित्रकार पद्मश्री तिलक गीताई, भारद्वाज फाउंडेशन जयपुर के संस्थापक डॉ. पीएम भारद्वाज, कलाकार एवं मूर्तिकार बी.एन. विचार, उद्यमी और एनिमेटर नितिन जैन सहित अनेक प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे। इवेंट का संपन्नता समारोह आज 23 अगस्त को शाम 5 बजे बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

पर्युषण महापर्व पर प्रतिदिन कॉलेज में दिया जाता है जैन भोजन

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर । बडे ही गर्व व प्रसन्नता की बात है कि मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल डेली कॉलेज इंदौर में विगत चालीस वषो से जैन समाज के महापर्व पर्युषण पर्व पर जैन समाज के बच्चों को श्रीमति पुष्पा पांड्या के प्रयास से पर्युषण पर्व के अवसर पर जैन विद्यार्थियों को 18 दिन शुद्ध जैन भोजन की व्यवस्था की जाती है। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने कहा कि संध्या कालीन भोजन सूर्यास्त पूर्व दिया जाता है। इस हेतु प्रति वर्ष पलासिया जैन समाज की वरिष्ठ सदस्या विजिया पहाड़िया, मंजू अजमेरा, पुष्पा कटारिया, सोनाली जैन इंद्रा अजमेरा, सुमन जैन, पुष्पा बाकलीवाल आदि तथा अभिभावकों के साथ हर वर्ष निवेदन करने जाती हैं। इस वर्ष भी पुष्पा पांड्या और सोनाली जैन ने एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर हर्षवर्धन सिह जी को 20 अगस्त से प्रारम्भ होने वाले श्वेताम्बर आम्नाय के तथा 28 अगस्त से 6 सितम्बर तक होने वाले दिगम्बर आम्नाय के दस लक्षण महापर्व तक विद्यार्थियों को जैन भोजन सूर्यास्त पूर्व देने के लिए पत्र दिया । दद्दू ने कहा कि निरंतर 40 वर्षों से इस व्यवस्था से बच्चों में संस्कार व सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में सहयोग देने हेतु धन्यवाद दिया ।साथ ही विद्यालय में क्षमावणी पर्व भी मनाए जाने का निवेदन किया।

मेवाड़ धर्म प्रमुख को मिले सोमनाथ शिवलिंग के चमत्कारिक अंश

उदयपुर. शाबाश इंडिया

मेवाड़ धर्म प्रमुख एवं श्री राजयोगी मेवाड़मठ मठाधीश्वर श्री श्री रोहित गोपाल सूत जी महाराज को गुजरात के सोमनाथ मंदिर के प्राचीन शिवलिंग के चमत्कारिक अंश प्राप्त हुए हैं। यह वही अंश हैं जिनके बारे में हाल ही में दक्षिण भारत में आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर जी ने बताया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार दक्षिण भारत में इस शिवलिंग के कुछ अंश श्री श्री रविशंकर जी के पास हैं और उत्तर भारत में यह दिव्य शिवलिंग के अंश अब मेवाड़ धर्म प्रमुख रोहित गोपाल सूत जी महाराज के पास भी मिले हैं। जो अपने आप में अद्भुत है। धार्मिक विद्वानों का मानना है कि सोमनाथ मंदिर का शिवलिंग अनादिकाल से अद्भुत और चमत्कारिक शक्तियों से परिपूर्ण रहा है। बताया जाता है कि इसके अंशों में चुंबकीय शक्ति विद्यमान है, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण और आस्था का केंद्र बन रही है। स्थानीय श्रद्धालुओं ने इसे दुर्लभ और ऐतिहासिक क्षण बताया, क्योंकि यह अवसर मेवाड़ को शिवभक्ति से और गहराई से जोड़ रहा है। महाराज रोहित गोपाल सूत जी ने कहा कि यह अंश केवल श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक ही नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति की दिव्यता का संदेश भी देते हैं। उन्होंने कहा कि सोमनाथ के ये शिवलिंग अंश भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं, जिनके दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं को मानसिक एवं आध्यमिक आनंद की अनुभूति होगी।

आरोग्य मन्दिर का निर्माण हो जिसमें बिना किसी भेदभाव के इलाज हो सके: मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज

शिक्षा पद्धति राष्ट्र भाषा में होगी तो सबको सहजता रहेगी। श्रावक संस्कार शिविर की हो रही है व्यापक तैयारियां : विजय धुर्रा

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

पुण्यवानो को किसी की सहायता की जरूरत नहीं रहती पुण्य हीन ही गरीब अशाय और दीन हीन की अवस्था में पहुंच कर कष्टों को सहन करता रहता है पुण्य के योग से आपको धन सम्पत्ति वैभव मिला तो अशोक नगर में एक ऐसा अस्पताल बनाओ जो सभी सातों समाजो के काम आ सके चलों अपन सब मिलकर एक ऐसा आरोग्यता का मन्दिर बनाये जिसमें जात पात का कोई विकल्प ना आये जिसमें सबसे पहले गरीब आदमी का इलाज बिना भेदभाव के हो। यदि चिकित्सा में भेद होता तो लखन भइया की सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लग जाता सुषेण वैद्य ने हमें शिक्षा दी कि भले ही शत्रु भी हो तो भी उसको चिकित्सा सुविधाएं मिलना चाहिए । भीषण युद्ध के बीच में जव लक्ष्मण जी को शक्ति लगीं तो शत्रु पक्ष में रहने वाले सुषेण वैद्य ने किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया चाहते तो कर सकते थे श्री राम चन्द्र जी शत्रु पक्ष के थे और भीषण युद्ध चल रहा था फिर भी सुषेण वैद्य ने अपना धर्म नहीं छोड़ा और लक्ष्मण जी को सही दवाई दी आज तो आपके घर में ही नकली दवा दे देते हैं ये कितना बड़ा फ्राड चल रहा है। महानुभाव दवा जिससे किसी की जान बचाई जा सकती है वह भी नकली हो गई कहा रही हमारी मानवीय संवेदनाएं कैसे रहेगी ये मानवता जीवित। कुछ तो विचार करना होगा आज मैं कह रहा हूं कि अशोक नगर वालों को अपने विवाह में जो दहेज मिला है उससे ही इतना बड़ा अस्पताल बनेगा कि लोग दूर दूर से देखने आयेंगे अभी पिताजी की सम्पत्ति की तो मैं बात ही नहीं कर रहा जिनकी रुचि मन्दिर बनाने में नहीं है वे लोग चिकित्सा सेवा अस्पताल बनाने के लिए आगे आए हम एक ऐसा आरोग्यता का मन्दिर जिसमें सभी प्रमुख की चिकित्सा हो सकें । इसके लिए आप सभी मिलकर एक समान विचार वाले की टीम बनाये जो इस कार्य को अंजाम दे सकें। उक्त आश्य के उद्गार सुभाष गंज मैदान में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए । उन्होंने कहा कि अशोक नगर में विश्व स्तरीय इनवरसीटि बनाओ जिसमें कोई जाति पातीं ना हो जो योग्यता के आधार पर शिक्षा दे सके मैं तुम्हारे लिए आशीर्वाद दूंगा कि ऐसा मन्दिर बनाओ जो सातों जातियों के काम आये आज शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने की बहुत आवश्यकता है जव तक आप शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं उठायेंगे तव तक आप विश्व का मुकाबला नहीं कर सकते विश्व के मुकाबले के लिए उच्च शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा होना चाहिए यदि ठान लें तो क्या नहीं हो सकता ये आप कर सकते हैं।

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज से लिया आशीर्वाद

अशोकनगर। प्रवास के दौरान परम श्रद्धेय जैन महामुनि श्री सुधा सागर जी महाराज से भेंट कर उनका आशीर्वाद केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने लिया। उन्होंने बताया कि उनकी दिव्य वाणी और आशीर्वाद से सेवा तथा जनकल्याण के मार्ग पर निरंतर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलती रहती है।